International Journal of Home Science 2022; 8(1): 155-157

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2022; 8(1): 155-157
© 2022 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 10-01-2022
Accepted: 15-02-2022

Priyanka Nagar
गृहविज्ञान, सहायक आचार्य,
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
Priyanka Nagar
गृहविज्ञान, सहायक आचार्य,
राजकीय कला कन्या महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

तिलोनिया : कौशल विकास और मानव उत्थान की मिसाल

Priyanka Nagar

सारांशः
तिलोनिया राजस्थान राज्य के अजमेर जिला के किशनगढ़ पंचायत समिति का एक प्रगृतिशील गांव है जिसे किसी पहचान की आवश्यकता नहीं है। यह गावं शिक्षा, आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए सभी दूरदराज के गांवों के लिए एक मिसाल बन गया है। जहां कईं सालों से अरूणा रॉय व उनके पति बंकर रॉय सामाजिक कार्य एवं अनुसंधान केन्द्र SWRC नामक स्वयं सेवी संगठन संचालित कर रहे है । तिलोनिया गैर–सरकारी संगठन बेयर फुट (नंगे पैर) कॉलेज का घर है। जिसकी स्थापना प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता बंकर रॉय ने की थी। बेयर फुट कॉलेज स्वैच्छिक शिक्षा, कौशल विकास स्वास्थ्य, पीने के पानी के क्षेत्र में काम कर रहा संगठन है। यह कॉलेज महिला सशक्तिकरण और मानव उत्थान के लिए ग्रामीण लोगों की सहायता में भागीदारी सुनिश्चित करता है। इसका लक्ष्य ग्रामीण लोगों को ऐसे कौशल सिखाना है जिसकी सहायता से वह अपना उत्थान कर सकें व गांव को बदल सकें। यह वयस्कों व बच्चों को विशेष रूप से पढ़ने, लिखने और लेखांकन का पाठ देता है।
अतः उपरोक्त अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य वर्तमान परिस्थितियों में हो रहे बदलाव को सुनिश्चित करना है तिलोनिया की महिला कारीगरों को विभिन्न हस्तशिल्प कौशल सिखाये गए हैं जो पारम्परिक शैली के है। अरूणा रॉय के मार्गदर्शन में इसमें ब्लॉक प्रिन्ट जो नक्काशीदार लकड़ी से निर्मित है इसके द्वारा विभिन्न प्रकार की डिजाइन के वस्त्र तैयार किये जाते है जो अलग–अलग समय पर व स्थान पर प्रयुक्त किये जाते है। महिलाओं के विकास की जानकारी उनके द्वारा बनाए गए विभिन्न प्रकार के हस्तनिर्मित बैग, स्कार्फ, सजावटी सामान आदि से पता चलता है जिसमें अद्भुद बदलाव देखने को मिल रहा है। गरीब महिलाओं को सोलर इन्जिनियर बनाने के लिए पढ़ने या लिखने की आवश्यकता के बिना सोलर लैम्प और वाटर पम्प स्थापित करने, निर्माण और मरम्मत जैसे कौशल सिखाए जाते है। महिलाएँ रंग–कोडिट चार्ट का उपयोग करके तारों के क्रमचय और संयोजन को याद रखना सिखाती है। वहीं स्थानीय ज्ञान को साझा करने के लिए कठपुतलियों का उपयोग किया जाता है।

संकेत शब्दः सशक्तिकरण, कौशलविकास, उत्थान, परिस्थितियाँ, अद्भुत, रंग–कोडित चार्ट, क्रमचय, संयोजन

प्रस्तावना
राजस्थान के अजमेर जिले का एक सुदूर गांव तिलोनिया जो पहली उपस्थिति में ऐसा लगता है कि पिछले 100 वर्षो से इसमें कोई परिवर्तन नहीं आया। इस छोटे से गांव ने दुनिया के नक्शे पर अपनी पहचान बनाई है। यह गांव सामाजिक कार्य और अनुसंधान का केन्द्र है। राजस्थान में कईं जगह पर दोहराया जाने के बाद, तिलोनिया मॉडल अब अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देशों में भी फैल गया है । यह भारत की वास्तविक भावना को सामने लाता है। यह सामाजिक उद्यमिता उसकी विशिष्टता और चुनौतियों के लिए लोगों की उम्मीद को उजागर करता है । यह गांव मानवीय प्रतिभा का चमत्कार है।
जहाँ कईं सालों से बंकर रॉय व अरूणा रॉय जो भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता है। भ्रष्टाचार से लड़ने व सरकारी पारदर्शिता को बढ़ावा देने के प्रयासों के लिए जाने जाते है। उन्हें समाज में गरीबों की मदद करने की आवश्यकता महसूस हुई, क्योंकि उन्हें पता चला कि अकेले सरकारी सहायता पर्याप्त नहीं है तब अरूणा रॉय ने अपने पति के साथ मिलकर सामाजिक सक्रियता शुरू की । जिसका मुख्य उद्देश्य गरीबों की मदद करना है। इसी के अन्तर्गत 1972 में बेयर फुट कॉलेज स्थापित किया गया जो 80,000 वर्ग फुट फैला एक परिसर है जिसमें रेजिडेंशियल, लाईब्रेरी, प्रशासनिक ब्लॉक, अस्पताल, पैथोलॉजिकल लेबोरेटरी, टिचर्स ट्रेनिंग यूनिट, वाटर टेस्टिंग लेबोरेटरी, क्राफ्ट शॉप, डेवलपमेन्ट सेन्टर, कठपुतली कार्यशाला आदि स्थित है। ग्रामीण समस्याओं का समाधान समुदाय के अन्तर्गत ही होता है। इन समस्याओं को बेयर फुट कॉलेज ने सौर ऊर्जा, स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, पानी, ग्रामीण हस्तशिल्प, लोगों की कार्यवाही, संचार, महिला सशक्तिकरण, आय सृजन, बंजर भूमि के विकास, बिजली और बिजली के साथ–साथ सामाजिक जागरूकता और ग्रामीण क्षेत्रों में संरक्षण में वर्गीकृत किया गया है।

यह कॉलेज गरीब, बेरोजगार युवाओं की पहचान करके अनौपचारिक, गैर–सरंचित, व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने में विश्वास करता है जो व्यक्ति अपनी औपचारिक शिक्षा को पूरा करने में असमर्थ रहें और ड्रॉपआउट के रूप में अपने–अपने गांवों में लौट गए। उन्हें सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से कौशल सिखाए जाते है। कॉलेज पाठ्यक्रम के बाद किसी भी पेपर की डिग्री या योग्यता नहीं देता। यह गाँव काफी समय से प्रचलित अपने विश्वास में दृढ़ है कि किसी व्यक्ति की सीखने की इच्छा औपचारिक डिग्री की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हैं। यहाँ की शिक्षा ग्रामीण बच्चों के समग्र विकास पर केन्द्रित है जिसमें साक्षरता इसका एक हिस्सा मात्र है। यह ज्ञान और कौशल प्राप्त करने की प्रक्रियाओं को हाथों–हाथ सीखने को प्रोत्साहित करता है। कॉलेज में बच्चों व महिलाओं के लिए अलग–अलग कार्यक्रम है। कॉलेज की नीति छात्रों को मुख्य रूप से गाँवों की सबसे गरीब महिलाओं को लेना है और उन्हें पढ़ने और लिखने की आवश्यकता के बिना सोलर लैम्प और वाटर पम्प स्थापित करने, निर्माण और मरम्मत जैसे कौशल सिखाये जाते है।

महिलाओं को सौर इन्जीनियर बनाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जिसके द्वारा वह पूरे भारत में बिजली पहुँचाने में मदद कर सकें। सोलर इन्जीनियर बनने का तरीका जानने के लिए कई जगहों से ग्रामीण महिलाएं राजस्थान के इस छोटे से गाँव में आती है और छः माह के प्रशिक्षण के बाद अपने–अपने गाँवों व समुदाय में बिजली लाती है। यहाँ महिलाएँ सिर्फ सौर इन्जीनियर ही नहीं हैं बल्कि वह सैनिटरी नैपकिन उत्पादन, दन्त चिकित्सा में भी भागीदार होती है और वह अपने बच्चों के लिए ''बालवाड़ी'' पोषण कार्यक्रमों के रिकॉर्ड को बनाये रखने के लिए कम्प्यूटर का उपयोग भी करती है। शिक्षित होना जरूरी नहीं है अनपढ़ व्यक्ति भी सौर पैनलों का परीक्षण करना और उन्हें इकठ्ठा करना सीख सकता है। अधिकांश महिलाऐं पढ़ या लिख नहीं सकती है लेकिन इसके बावजूद वह हमें सिखाती है कि कोई भी व्यक्ति औपचारिक शिक्षा के बिना सही प्रशिक्षण प्राप्त कर सकता है।

वहीं महिलाओं को अनेक हस्तशिल्प कौशल सीखाये जाते है जो परम्परागत रूप से कई सालों से चले आ रहे है जिसमें ब्लॉक प्रिन्ट जो एक प्राचीन परम्परा है आज यह राजस्थान में प्रचलित एक कौशल है जिसमें डुवेट सेट, रजाई और सजावटी तकिये कवर महिला कारीगरों के द्वारा हाथ से प्रिन्ट किये जाते है।

वहीं ब्लॉक प्रिन्ट का विशेष स्थान है। इस विशिष्ट पैटर्न को निर्मित करने के लिए नक्काशीदार लकड़ी के ब्लॉक का प्रयोग किया जाता है जिनसे विभिन्न विधि द्वारा कपड़ों पर डिजाइन अंकित की जाती है। यह शिल्प भारत के कारीगरों का आज भी सदियों पुराना शिल्प हैं। इसी के अन्तर्गत स्कार्फ, पेपर बुक, सजावटी सामान व अन्य कई तरह के उत्पाद भी तैयार किये जाते है। इनके यह उत्पाद अब बड़े पैमाने पर उत्पादित होने लगे है व देश के कई हिस्सों में इनका उपयोग होने लगा है। इस गाँव को फर्नीचर उत्पादित वस्तुओं के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ शीशम व बबूल की लकड़ी से आकर्षक वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। जिसमें कशीदाकारी चमड़े व बुनें हुए आसनों के साथ पारम्परिक पाइदों का निर्माण भी किया जाता है। जिसके लिए लोगों को प्रशिक्षण दिया जाता है।

बुनाई पर परम्परागत रूप से एक अनुसूचित जाति का कब्जा था। लेकिन वर्तमान परिवर्तन से सभी समुदायों के लाग बुनकर बन गये हैं। वहीं महिलाओं ने बुनाई करने की विधि सीखने के लिए परम्पराएँ तोड़ी है। इन उत्पादों के उत्पादन से महिलाओं को होने वाली आय से वह अपने परिवारों का समर्थन करने व अपने बच्चों को शिक्षित करने में योगदान देती है इससे महिला कारीगरों की व्यावसायिक और उद्यमशीलता कौशल का विकास होता है। इसी के साथ कई तरह के संदेश साझा करने के लिए ग्रामीण विभिन्न कठपुतलियों का प्रयोग करते है। कठपुतली की पारम्परिक कला का उपयोग कॉलेज द्वारा स्वास्थ्य, शिक्षा और मानव अधिकारों के बारे में जानकारी फैलाने के लिए किया जाता है । जो बच्चे या महिलाएँ स्कूल नहीं जा पाते उनके लिए नाइट स्कूल का निर्माण किया गया क्योंकि उन्हें दिन में जानवरों की देखभाल करनी पड़ती है जिसके लिए बेयर फुट कॉलेज ने रात के स्कूल शुरू किए जिसके द्वारा उन बच्चों व महिलाओं का कौशल विकास भी सुव्यवस्थित तरीके से हो सकें।

वहीं स्थानीय समुदायों के भूजल में पानी की अशुद्धियों का पता लगाने के लिए एक वेबसाइट का निर्माण किया गया ताकि लोगों को सिखाया जा सकें कि भूजल का परीक्षण और वेब प्लेटफॉर्म का निर्माण कैसे किया जाता है।

उद्देश्य

- कौशल विकास व मानव उत्थान में हो रहे बदलाव को सुनिश्चित करना।
- ग्रामीण महिलाओं और लड़कियों के लिए आर्थिक अवसर प्रदान करना।
- कौशल विकास का महिलाओं के व्यक्तित्व पर प्रभाव।
- महिलाओं की हस्तकला को प्रोत्साहित कर समाज में नया मुकाम हासिल करने पर जोर देना।
- बच्चों को शिक्षा और साक्षरता का सही संतुलन प्रदान करना।

परिणाम व निष्कर्ष

तिलोनिया गावं में कौशल विकास व उत्थान से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की गई।

महिलाओं व बच्चों के जीवन स्तर में उन्नति हुई उनकी भागीदारी से समाज को अनेक लाभ मिले। महिलाओं के पहल करने से वह पुरूष प्रधान समाज में अपनी पहचान प्राप्त कर सफलता के नये–नये आयामों को प्राप्त कर सकीं।

- तथ्यों से जानकारी प्राप्त हुई कि महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाकर उनके समग्र विकास पर जोर दिया गया है।
- ग्रामीण लोगाों को ऐसे कौशल सिखाये जाते है जिनसे वह अपने लिंग, जाति, उम्र या स्कूली शिक्षा की परवाह किए बिना अपने गाँवों को बदल सकें।
- भारत के इस छोटे गाँव में स्थित एकल–गैर लाभकारी संस्था ने 3 मिलियन लोगों के जीवन को बदलने में मदद की है और यह समाप्त नहीं हुआ है।
- संस्था ने पानी, बिजली, आवास, स्वास्थ्य शिक्षा और आय की बुनियादी जरूरतों को सम्बोधित करके ग्रामीण गरीबों के जीवन को बेहतर करने के लिए काम किया है।
- लोगों को खुद को बेहतर बनाने और उन्हें साक्षर बनने और व्यावहारिक क्षेत्रों में अपने ज्ञान को आगे बढ़ाने का अवसर दिया है।
- संस्था ने गरीबी और असमानता की समस्या को ठीक नहीं किया बल्कि नागरिकों को समाधान बताया ताकि भारतीय समुदाय को लगे कि वे अपने समुदाय की मदद करने के लिए अपनी भागीदारी दे रहें हैं।
- संस्था महिलाओं को प्रशिक्षण देती है कि किस तरह से सामान्य रूप से पुरूषों के वर्चस्व वाले कार्य करें।
- यह पुरूषों के साथ समानता देता है और उन्हें अधिक आत्म निर्भर बनने में मदद करता है।
- ''यह एकमात्र कॉलेज है जहाँ शिक्षक शिक्षार्थी है और शिक्षार्थी शिक्षक''।
- पांच सिद्धान्त जो कॉलेज के कामकाज का एक अभिन्न अंग है–समानता, सामुहिकता, आत्मनिर्भरता, विकेन्द्रीकरण और तपस्या।

संन्दर्भः

1. तिलोनिया में बेयरफुट कॉलेज, 1997, लेखकः संजीत (बंकर) रॉय, प्रकाशनः इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

2. भारत का बेयर फुट कॉलेज और यूनेस्को लड़कियों के लिए सेना में शामिल हो गए और महिला सशक्तिकरण। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन।
3. नंगे पैर आश्चर्य के लिए वैश्विक सम्मान बंकर रॉय। द हिन्दू । 20 सितम्बर 2009 ।
4. अरूणा रॉय (भारतीय कार्यकर्ता) – एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका । 30 जनवरी 2013।
5. "A Barefoot Journey to Tilonia". The Better India. 31 January 2010. Retrieved 1 August 2020

Websites

1. https://www.thebetterindia.com/1176/barefoot-journey-to-tilonia/
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Tilonia
3. https://www.tiloniabazaar.org/
4. https://www.tilonia.com/